

NATIONAL AGRICULTURAL STUDENTS ORGANIZATION

हिंदी मासिक

कृषि पत्रिका

(कृषि छात्रों, किसानों एवं कृषि वैज्ञानिक हेतु समर्पित)



जय किसान
जय कृषि विज्ञान

डॉ. भाष्कर दुबे

मुख्य संपादक

editorinchief@naso.org.in

डॉ अनुराग रजनीकांत तायडे

संपादक

editor@naso.org.in

सहायक प्रोफेसर - कीट विज्ञान विभाग, शुआट्स,
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

डॉ. अमित कुमार

संपादक

editor@naso.org.in

सहायक प्रोफेसर - कृषि अर्थशास्त्र विभाग,
SHUATS, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

अनुग्रह साक्षी

संपादक

editor@naso.org.in

सहायक प्रोफेसर - कृषि विस्तार एवं संचार
विभाग, शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

निखिल तिवारी श्रीदत्त

सह-संपादक

coeditor@naso.org.in

टीचिंग एसोसिएट - कृषि विस्तार एवं संचार
विभाग, शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

शशांक सिंह

सह-संपादक

coeditor@naso.org.in

टीचिंग एसोसिएट - शस्य विज्ञान विभाग,
शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

प्रकाशक –

डॉ. भाष्कर दुबे

पत्रिका का प्रकार - हिंदी, मासिक, कृषि पत्रिका

पंजीकृत पता - अतरौरा मीरपुर, सोनपुरा, प्रतापगढ़ (उ.प्र.)

230124

कार्यालय - गंगोत्री नगर, SHUATS कृषि विश्वविद्यालय, नैनी,

प्रयागराज, उत्तर प्रदेश 211007

Website – www.naso.org.in

E-mail – editorinchief@naso.org.in

Contact – 9936902749 / 7068708058

धान की उन्नत खेती

सीतेश झा

siteshjha169@gmail.com

शोधकर्ता - कृषि विज्ञान विभाग,

कृषि विज्ञान संस्थान, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी

परिचय:

धान (Rice) भारत की प्रमुख खाद्य फसल है। इसे "जीवन का अन्न" भी कहा जाता है। भारत विश्व में धान उत्पादन में अग्रणी देशों में से एक है। पारंपरिक खेती की तुलना में उन्नत विधियों द्वारा धान की खेती से उच्च उत्पादन, कम लागत, और बेहतर गुणवत्ता प्राप्त की जा सकती है।

धान की उन्नत खेती की मुख्य बातें:

1. उन्नत किस्मों का चयन:

| क्षेत्र | उपयुक्त किस्में |
|-----------------------|---------------------------------|
| उत्तर भारत | पूसा बासमती-1, शरबती, आरएच-10 |
| पूर्व भारत | स्वर्णा, रजेंद्र सुवर्णा, सभागी |
| दक्षिण भारत | बीपीटी-5204, तमिलनाडु पूसा |
| पूर्वी राज्यों के लिए | सबमर्जेस सहिष्णु - 'सभागी धान' |

उन्नत किस्मों का चुनाव स्थानीय जलवायु, रोग प्रतिरोध और उत्पादकता के आधार पर करना चाहिए।

2. भूमि तैयारी:

पहली जुताई गहरी करनी चाहिए।

खेत को समतल कर पानी रोकने की उचित व्यवस्था करें।

खेत में जैविक खाद (गोबर, वर्मी कम्पोस्ट) मिलाएं।

3. बीज उपचार:

बीजों को थायरम या कार्बेन्डाजिम से उपचारित करें।

जैविक विकल्प: बीजामृत का प्रयोग करें (गोमूत्र, गोबर, चूना, पानी से बना घोल)।

4. रोपाई विधि:

| विधि | विशेषता |
|---|---|
| परंपरागत विधि | नर्सरी तैयार कर 25-30 दिन के पौधों की रोपाई |
| SRI विधि (System of Rice Intensification) | 8-12 दिन के पौधे, कम पानी, अधिक उत्पादन |
| डायरेक्ट सीडिंग | बीज सीधे खेत में बोना, श्रम की बचत |

SRI पद्धति में उत्पादन 20-40% तक बढ़ सकता है और पानी की 30-40% बचत होती है।

5. सिंचाई और जल प्रबंधन:

लगातार पानी भरा रखना आवश्यक नहीं है।

Alternate Wetting and Drying (AWD) तकनीक अपनाएँ।

पानी की अधिकता से जड़ सड़न और रोग बढ़ सकते हैं।

6. खाद प्रबंधन:

NPK अनुपात: नाइट्रोजन (100-120 किग्रा/हेक्टेयर), फॉस्फोरस (60 किग्रा), पोटाश (40 किग्रा)

जैविक विकल्प: जीवामृत, वर्मी कम्पोस्ट, नीम खली

7. कीट व रोग नियंत्रण:

| कीट/रोग | नियंत्रण उपाय |
|---------------------|-----------------------------------|
| धान की झुलसा बीमारी | ट्राइकोडर्मा + नीम अर्क का प्रयोग |
| तना छेदक | फेरोमोन ट्रैप, जैविक कीटनाशक |
| भूरा धब्बा | फफूंदनाशक का छिड़काव |

8. कटाई और मड़ाई:

फसल पकने पर 80-85% बालियां पीली हो जाएं तब कटाई करें।

शेसर या परंपरागत विधि से दाना निकालें।

धान की उन्नत खेती के लाभ:

| लाभ | विवरण |
|----------------------|---|
| उत्पादन में वृद्धि | पारंपरिक विधि से 40-50% अधिक |
| जल की बचत | SRI और AWD से पानी की 30% तक बचत |
| लागत में कमी | उन्नत तकनीकों से श्रम और उर्वरक खर्च कम होता है |
| रोग प्रतिरोध | उन्नत किस्में अधिक टिकाऊ होती हैं |
| बाज़ार में अच्छा दाम | बासमती और रोग-मुक्त फसलों की अधिक मांग |

निष्कर्ष:

धान की उन्नत खेती सिर्फ उत्पादन बढ़ाने की नहीं, बल्कि सतत कृषि विकास, जल और मृदा संरक्षण, और किसान की आय दोगुनी करने का एक सशक्त माध्यम है। यदि वैज्ञानिक विधियों, जैविक साधनों और सरकारी योजनाओं का सही तरीके से उपयोग किया जाए, तो धान खेती न केवल लाभकारी, बल्कि पर्यावरण हितैषी भी बन सकती है।